जल : मानवता की अतृप्त प्यास

(Water : Unquenchable thirst of Mankind)

संपादक

संतन कुमार राम

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली-110093

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो.: 9839977133, 9910143493

© संतन कुमार राम

मूल्य : 850.00

ISBN : 978-93-87932-44-9

प्रथम संस्करण : 2020

अक्षरान्वयन : रमेश कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110093.

ग्रामीण जलस्रोतों का महात्म्य और जल संकट

शिव कुमार

जीवन में जल का बड़ा महत्व है। हमारे शरीर का तीन चौथाई हिस्सा जल का है तो हमारी पृथ्वी के तीन चौथाई हिस्से पर जल पाया जाता है। इसीलिए कहा जाता है 'जल है तो जीवन है' अर्थात बिना जल के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जल की इतनी महत्ता और उपलब्धता के बावजूद मानव जीवन में जल का संकट धीरे-धीरे एक विकराल रूप लेता जा रहा है। मानव सभ्यता और जीवन के वे क्षेत्र जो कभी जल से आप्लावित रहते थे। धीरे-धीरे औद्योगीकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण के फलस्वरूप जीवन शैली और व्यवहार में परिवर्तन के कारण जल प्रभावित या सूखे क्षेत्र में परिवर्तित होते जा रहे हैं। दुनिया की दो तिहाई आबादी साल में कम से कम 1 महीने जल संकट का सामना करती है।[1] इसीलिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2015 के अपने सतत विकास के 17 लक्ष्यों में 'सभी को पानी और स्वच्छता' के रूप में लक्ष्य 6 का चुनाव किया है।[2] भारत के एक तिहाई जिले गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं।[3] दरअसल में जल संकट पानी की उपलब्धता से अधिक उसके कुप्रबंधन, लोगों के

व्यवहार एवं रहन-सहन के तौर-तरीकों में बदलाव से जुड़ा हुआ है।

प्राचीन मानव सभ्यताओं का जन्म और विकास जल के अच्छे स्रोतों के निकट आ हुआ था। धीरे-धीरे मानव ने अपने बल, बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अपने हित में करते हुए, मानव सभ्यता का विकास एवं बढ़ती आबादी का फैलाव पृथ्वी के सभी भू भागों पर कर दिया। सभ्यता के विकास के क्रम में मानव में अपनी एवं अपने समुदाय की जल की वर्ष भर की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनेक छोटे-बड़े जल स्रोतों को भी विकसित किया। मानव द्वारा कृषि के विकास ने मानव के अन्न उत्पादन एवं अन्य जरूरतों के लिए पानी की

लिए अब गाँव में कोई भी गड़ही नहीं बची है। पानी निकलने के बाद उसमें बची मिट्टी रास्ते में कीचड़ के रूप में छूट जाती है इसीलिए गाँव की गलियाँ बारिश ही नहीं गर्मी में भी कीचड़ से गीली रहती है। नालियाँ सिल्ट और गन्दगी से, मिट्टी से हर बार पट जाती है और अक्सर भरी पड़ी रहती है। अब गाँवों में सिर्फ सरकारी या सार्वजनिक तालाब ही बचे हैं और अधिकांशतः वे भी अतिक्रमण या दुर्व्यवस्था के शिकार है। अब इन्हें कहीं-कहीं पक्का भी किया जा रहा है। इससे इनकी स्वाभाविक जल ग्रहण की क्षमता प्रभावित हो रही है। इनके पानी का पूरा उपयोग ना होने के कारण वे स्वच्छ भी बने नहीं रह पाते हैं। लोगों/पशुओं के प्रवेश प्रतिबंधित होने के कारण अब लोगों के लिए ये बहुत उपयोगी नहीं रह गए हैं। इसलिए ग्रामीणों का इनसे बहुत लगाव भी नहीं है।

अंत में गाँवों में बढ़ते जल संकट एवं लुप्त होते तालाबों-पोखरों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि गाँव में पाए जाने वाले पुराने तालाब एवं गड़हियाँ प्राकृतिक रूप से जल चक्र को बनाए रखने में प्रमुख योगदान देती रही है। इसके कारण वर्षा जल बहुधा वर्षभर उपलब्ध रहता और ग्रामीण जीवन में जल संकट उत्पन्न नहीं होता था। वर्तमान के दौर में भी गाँवों में पुराने जल स्रोतों जल निकायों को पुनः स्थापित करने, संरक्षित करने तथा वर्षा की पानी को रोकने के लिए स्थानीय स्तर पर गड्ढों के निर्माण, एवं खेतों में मेड़बंदी करने की आवश्यकता है। ताकि गाँव का पानी गाँव में ही बना रहे और गाँव पुराने समय की तरह ही वर्ष भर अपनी जरूरत का पानी अपने जल स्रोतों से प्राप्त करते रहे। इससे पशु-पक्षियों के साथ-साथ मानवता और धरती की प्यास भी जल से संतृप्त होती रहेंगी।

सन्दर्भ सूची

1. http://www.weforum.org/reports/the-global-risk-report-2016/
2. Yojana (2016, July) Vol.60, Published by the ministry of Information and Broadcasting, New Delhi (http://www.yojana.gov.in
3. Kumar, S. (2002). Socioeconomic Status and Health: A Study of a Village in Eastern UP. An. unpublished M Phil dissertation submitted to CSMCH,SSS, JNU, New Delhi.